अच्छी दिवाली हमारी

सभी इन्द्रियों में हुई रोशनी है । यथा वस्तु है सो तथा भासती है ।।
विकारी जगतब ब्रह्म है निर्विकारी । मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ।।
दिया दर्श ब्रह्मा जगतब सृष्टि कर्ता । भवानी सदा शंभु ओ विघ्न हर्ता ।।
महा विष्णु चिन्मूर्ति लक्ष्मी पधारी । मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ।।
दिवाला सदा ही निकाला किया मैं । जहाँ पे गया हारता ही रहा मैं ।।
गये हार हैं आज शब्दादि ज्वारी । मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ।।
लगा दाव पे नारी शब्दादि देते । कमाता हुआ द्रव्य थे जीत लेते ।।
मुझे जीत के वे बनाते भिकारी । मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ।।
गुरु का दिया मंत्र मैं आज पाया । उसी मंत्र से ज्वारियों को हराया ।।
लगा दाँव वैराग्य ली जीत नारी । मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ।।
सलोनी, सुहानी, रसीली मिठाई । वशिष्ठादि हलवाइयों की है बनाई ।।
उसे खाय तृष्णा दुराशा निवारी । मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ।।
हुई तृप्ति, संतुष्टता, पुष्टता भी । मिटी तुच्छता, दुःखिता, दीनता भी ।।
मिटे ताप तीनों हुआ मैं सुखारी । मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ।।
करे वास भोला ! जहाँ ब्रह्म विद्या । वहाँ आ सके ना अंधेरी अविद्या ।।
मनावें सभी नित्य ऐसी दिवाली । मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ।।